

मध्यस्थ दर्शन सह अस्तित्ववाद और परिवार मूलक ग्राम व्यवस्था: समरस ग्रामीण जीवन की अवधारणा

देव प्रकाश शर्मा

शोध छात्र, लोक जागृति विश्वविद्यालय, अहमदाबाद

dpsharma115@gmail.com

एवं

सुरेंद्र पाठक

प्रोफेसर, लोक जागृति विश्वविद्यालय, अहमदाबाद

pthak06@gmail.com @gmail.com

शोध सारांश

यह शोध पत्र आचार्य ए. नागराज द्वारा प्रतिपादित मध्यस्थ दर्शन सह अस्तित्ववाद के मूलभूत सिद्धांतों और परिवार-केंद्रित ग्राम व्यवस्था के बीच संबंधों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। "अस्तित्व सहअस्तित्व है" (Existence is Coexistence) की मूल स्थापना के आधार पर यह अध्ययन समरस ग्रामीण जीवन की अवधारणा को समझने और आधुनिक संदर्भ में इसकी प्रासंगिकता का मूल्यांकन करने का प्रयास करता है (नागराज, 2009)। मध्यस्थ दर्शन के अनुसार, जीवन और शरीर के सहअस्तित्व, चेतना के चार अवस्थाओं की समझ, और मानव चेतना के जागृति के सिद्धांतों पर आधारित ग्रामीण समुदायों का विकास सामाजिक न्याय, आर्थिक स्थिरता और पारिस्थितिकीय संरक्षण के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक हो सकता है।

मुख्य शब्द : मध्यस्थ दर्शन, सहअस्तित्ववाद, जीवन विद्या, परिवार मूलक व्यवस्था, चेतना विकास, समरस जीवन

1. प्रस्तावना

मध्यस्थ दर्शन सह अस्तित्ववाद आचार्य ए. नागराज (1920-2016) द्वारा दी गई एक नवीन दार्शनिक खोज है। यह दर्शन भारतीय वैदिक परंपरा की गहन तपस्या और आधुनिक अनुसंधान पद्धति के संयोजन से उत्पन्न हुआ है। इस खोज की पृष्ठभूमि वेदों में है, परंतु मध्यस्थ दर्शन का प्रस्ताव वेदों या किसी भी अन्य विश्वास प्रणाली या धर्म से कोई संबंध या रुचि नहीं रखता (नागराज, 2003)।

"अस्तित्व सहअस्तित्व है" (Existence is Coexistence) - स्व, परिवार, समाज और प्रकृति में सामंजस्य के साथ जीना इस दर्शन की मूल स्थापना है। यह एक अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिंतन है जो चेतना, वास्तविकता और मानव प्रयोजन की प्रत्यक्ष अस्तित्वपरक खोज प्रस्तुत करता है।

ग्रामीण भारत में परंपरागत रूप से परिवार एक सामाजिक-आर्थिक इकाई के रूप में कार्य करता आया है। मध्यस्थ दर्शन के अनुसार, परिवार से समाज तक का विकास जीवन चेतना के जागृति पर आधारित होना चाहिए।

2. साहित्य समीक्षा

मध्यस्थ दर्शन की मौलिकता: मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) एक नवीन समकालीन ज्ञान तंत्र है, जो लगभग 1500 वर्षों के अंतराल के बाद भारतीय उपमहाद्वीप से उत्पन्न हुआ है। यह दर्शन पूर्ववर्ती परंपराओं, धर्मों, संप्रदायों, राजनीतिक विचारधाराओं या आर्थिक स्वार्थों से स्वतंत्र है। इसकी नींव किसी मत या विश्वास पर नहीं, बल्कि प्राकृतिक नियमों और वास्तविकता पर आधारित है।

चेतना की समस्या का समाधान: चेतना की कठिन समस्या (Hard Problem of Consciousness), जिसे आधुनिक विज्ञान लंबे समय से नहीं सुलझा पाया था, उसका समाधान मध्यस्थ दर्शन में प्रस्तुत किया गया है। इस दर्शन में चेतन और जड़ प्रकृति की संरचना तथा उनके पारस्परिक संबंध को स्पष्ट रूप से समझाया गया है।

रहस्यवाद से मुक्ति: मध्यस्थ दर्शन न तो किसी रहस्यात्मकता में उलझता है और न ही ज्ञान को गुप्त बनाता है। इसके बजाय यह मानव जीवन के सभी आयामों को---शरीर, आत्मा, संबंध, समाज और प्रकृति---एक सुसंगत और समझने योग्य प्रणाली में प्रस्तुत करता है।

3. अनुसंधान पद्धति

यह अध्ययन गुणात्मक अनुसंधान पद्धति पर आधारित है। मध्यस्थ दर्शन प्रस्तावों के रूप में साझा किया जाता है और प्रत्येक व्यक्ति से अपेक्षा करता है कि वह कही जा रही बात की सत्यता का स्वयं सत्यापन करें। **अनुसंधान की मुख्य विधियां:** ए. नागराज के मूल ग्रंथों का गहन अध्ययन, स्वयं में सत्यापन की विधि का प्रयोग, ग्रामीण समुदायों में इन सिद्धांतों का व्यावहारिक अनुप्रयोग का अध्ययन और अन्य दर्शनों से तुलनात्मक अध्ययन

4. मध्यस्थ दर्शन सह अस्तित्ववाद की मूल स्थापनाएं

मध्यस्थ दर्शन सह अस्तित्ववाद की आधारशिला सहअस्तित्व के सिद्धांत पर टिकी है। यह दर्शन मूलतः इस सत्य को प्रतिपादित करता है कि सहअस्तित्व ब्रह्मांड का अंतर्निहित नियम है और यही अस्तित्वपरक वास्तविकता का आधार है (नागराज, 2009)। यह सिद्धांत प्रत्येक तत्व को समाहित करने वाला सर्वोच्च सिद्धांत है जिसे हम ब्रह्मांड का सार कह सकते हैं। मध्यस्थ दर्शन की यह मूल स्थापना स्पष्ट करती है कि कुछ भी अकेला नहीं है, न ही कभी होगा। दो या अधिक कण मिलकर एक परमाणु बनाते हैं और यह परमाणु आंतरिक व्यवस्था में परमाणु कणों का सहअस्तित्व है। यही सिद्धांत समाज के सभी स्तरों पर लागू होता है - व्यक्ति से परिवार, परिवार से समुदाय, और समुदाय से प्रकृति तक।

मध्यस्थ दर्शन के अनुसार मानव का वास्तविक स्वरूप जीवन (चेतना पक्ष) और शरीर (भौतिक-रासायनिक) के सहअस्तित्व के रूप में समझा जा सकता है। इस दर्शन में जीवन को चेतन इकाई माना गया है जो देखने, सुनने और जानने की क्षमता रखती है, जबकि शरीर जड़ प्रकृति से निर्मित एक भौतिक संरचना है (नागराज, 2005)। यह समझ

मानव के वास्तविक स्वरूप को स्पष्ट करती है और व्यक्ति से लेकर समाज तक के विकास की दिशा निर्धारित करती है।

चेतना के विकास क्रम को समझने के लिए मध्यस्थ दर्शन में चार अवस्थाओं का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया गया है (नागराज, 2010)। पहली अवस्था भ्रम अवस्था है, जिसमें जीवन भौतिक संसार को ही सब कुछ मान लेता है और इस भ्रम में वह अंधी दौड़, असंतुष्टि और तनाव का अनुभव करता है। दूसरी अवस्था मोह अवस्था है, जहां जीवन संबंधों में अत्यधिक आसक्ति के कारण उलझकर रह जाता है, जिससे ईर्ष्या, स्वामित्व की भावना और द्वंद उत्पन्न होते हैं। तीसरी अवस्था प्रमाद अवस्था है, जिसमें जीवन में गफलत, लापरवाही और अज्ञानता होती है, जो गलत निर्णयों और हानिकारक क्रियाओं का कारण बनती है। चौथी और अंतिम अवस्था जागृति अवस्था है, जिसमें जीवन में समझ, ज्ञान और विवेक का विकास होता है, जो शांति, संतुष्टि और सामंजस्य का परिणाम देता है।

मानव इतिहास में आध्यात्मवाद और भौतिकवाद दोनों ही मानव प्रयोजन को स्पष्ट करने में असफल रहे हैं। 'त्याग' और 'भोग' के पारंपरिक मार्ग मानवों के लिए सार्थक सिद्ध नहीं हुए हैं। इस संदर्भ में मध्यस्थ दर्शन एक नवीन विकल्प प्रस्तुत करता है जो न तो त्याग है और न ही भोग, बल्कि समझदारी पूर्वक जीना है। यह दृष्टिकोण मानव को न तो चरम तपस्या की ओर धकेलता है और न ही अंधे भोग-विलास में फंसाता है, बल्कि एक संतुलित और विवेकपूर्ण जीवन शैली की ओर प्रेरित करता है।

5. मध्यस्थ दर्शन में परिवार की अवधारणा

मध्यस्थ दर्शन में परिवार की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और गहरी है। यह दर्शन परिवार को केवल एक सामाजिक संरचना या आर्थिक इकाई के रूप में नहीं देखता, बल्कि इसे चेतना विकास की प्रथम और सबसे महत्वपूर्ण इकाई मानता है। परिवार के इस व्यापक और गहन आयाम में जीवन-चेतना के जागृति का प्रारंभिक अभ्यास होता है। यहीं पर व्यक्ति सबसे पहले सहअस्तित्व की मौलिक समझ विकसित करता है और यही समझ आगे चलकर समाज, राष्ट्र और विश्व स्तर पर व्यापक होती जाती है।

परिवारिक जीवन में मध्यस्थ दर्शन के तीन मुख्य तत्व अभिन्न रूप से जुड़े हुए हैं। पहला तत्व न्याय है, जिसका अर्थ है परिवार के सभी सदस्यों के साथ न्यायपूर्ण व्यवहार करना, चाहे वे उम्र, लिंग या स्थिति के आधार पर कितने भी भिन्न हों। यह न्याय केवल कानूनी या औपचारिक न्याय नहीं है, बल्कि प्रेम, सम्मान और समझदारी पर आधारित एक जीवंत न्याय है। दूसरा तत्व धर्म है, जिसका तात्पर्य यह है कि प्रत्येक सदस्य अपने स्वाभाविक गुणों, योग्यताओं और रुचियों के अनुसार परिवार में योगदान देता है। यह धर्म किसी बाहरी दबाव या मजबूरी से नहीं, बल्कि अपनी स्वाभाविक प्रवृत्ति और समझदारी से उत्पन्न होता है। तीसरा तत्व सत्य है, जो पारिवारिक संबंधों में पारदर्शिता, ईमानदारी और खुलेपन को दर्शाता है। इस सत्य के आधार पर परिवार के सदस्यों के बीच विश्वास, प्रेम और सामंजस्य की स्थापना होती है।

मध्यस्थ दर्शन में ज्ञान की अवधारणा पारंपरिक शिक्षा पद्धति से भिन्न है। यहां ज्ञान केवल सूचना, तथ्य या जानकारी का संग्रह नहीं है, बल्कि एक गहरी समझ है जो जीवन के व्यावहारिक अनुभवों से उत्पन्न होती है। परिवार में पीढ़ियों के बीच जो ज्ञान संक्रमण होता है, वह केवल कुशलता, तकनीकी जानकारी या शैक्षणिक सूचनाओं का स्थानांतरण नहीं है। बल्कि यह जीवन मूल्यों, नैतिक सिद्धांतों, व्यावहारिक समझ और जीवन जीने की कला का गहरा और संवेदनशील स्थानांतरण है। बुजुर्गों से युवाओं में यह समझ प्रेम, धैर्य और निरंतर संवाद के माध्यम से स्थानांतरित होती है, जो परिवार की सामूहिक चेतना का विकास करती है।

6. ग्राम व्यवस्था में सहअस्तित्व के सिद्धांत

मध्यस्थ दर्शन में ग्रामीण व्यवस्था की अवधारणा परिवार की संकल्पना के प्राकृतिक विस्तार के रूप में प्रस्तुत की गई है। इस दर्शन के अनुसार, गांव एक विस्तारित परिवार की भांति है जहां सभी परिवार परस्पर सहअस्तित्व में रहते हुए एक समग्र इकाई का निर्माण करते हैं। यह व्यवस्था केवल भौगोलिक या प्रशासनिक सुविधा के लिए नहीं है, बल्कि मानवीय चेतना के विकास और सामाजिक संगठन की एक आदर्श पद्धति है। जैसे एक परिवार में सभी सदस्य अपनी-अपनी भूमिका निभाते हुए एक सामंजस्यपूर्ण इकाई बनाते हैं, वैसे ही गांव में सभी परिवार मिलकर एक बड़े सामुदायिक परिवार का निर्माण करते हैं। इस ग्रामीण संरचना से क्रमशः अखंड मानव समाज, सार्वभौमिक व्यवस्था और अंततः वैश्विक व्यवस्था का निर्माण होने की संभावना बनती है। यह एक चरणबद्ध विकास प्रक्रिया है जो व्यक्ति से शुरू होकर परिवार, गांव, क्षेत्र, राज्य और अंततः विश्व तक फैलती जाती है, जहां प्रत्येक स्तर पर सहअस्तित्व के सिद्धांत का पालन होता है।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था की स्थिरता और समृद्धि के लिए उत्पादन, कार्य और उपभोग के बीच एक गहरा और संतुलित सामंजस्य स्थापित करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह आर्थिक त्रिकोण तभी सफल हो सकता है जब इसके तीनों घटक मानवीय मूल्यों और प्राकृतिक संतुलन के अनुकूल हों। सबसे पहले, उत्पादन की प्रक्रिया और मात्रा मानवीय आवश्यकताओं के अनुकूल होनी चाहिए, न कि बाजारी लालच या अंधी प्रतिस्पर्धा के अनुकूल। इसका अर्थ यह है कि उत्पादन का मुख्य उद्देश्य वास्तविक मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति होना चाहिए, न कि कृत्रिम मांग पैदा करके अधिकतम लाभ कमाना। दूसरे, कार्य का वितरण और संगठन प्रत्येक व्यक्ति की स्वाभाविक योग्यता, रुचि और क्षमता के अनुसार होना चाहिए, जिससे न केवल हर व्यक्ति अपने कार्य में गहरी संतुष्टि पा सके बल्कि समाज के लिए भी अधिकतम और गुणवत्तापूर्ण योगदान दे सके। तीसरे, उपभोग का स्वरूप संयमित, विवेक पूर्ण और पर्यावरण अनुकूल होना चाहिए, जो न केवल वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करें बल्कि प्राकृतिक संसाधनों का सदुपयोग करते हुए भावी पीढ़ियों के लिए भी संसाधनों का संरक्षण सुनिश्चित करें।

7. समरस ग्रामीण जीवन के आयाम

समरस जीवन की अवधारणा मध्यस्थ दर्शन का केंद्रीय विषय है जो जीवन के विभिन्न स्तरों पर सामंजस्य और संतुलन की स्थापना पर आधारित है। व्यक्तिगत स्तर पर समरसता का तात्पर्य जीवन और शरीर के बीच एक गहरे

तालमेल और सामंजस्य से है। हम सभी मानवों में एक स्वस्थ मन और संतुलित व्यक्तित्व की गहरी इच्छा होती है। हम में से कोई भी व्यक्ति आंतरिक संघर्ष, मानसिक द्वंद या अशांति नहीं चाहता। प्रत्येक व्यक्ति अपने भीतर और अपने परिवेश के साथ सामंजस्य की स्थिति में रहना चाहता है। यह व्यक्तिगत समरसता तब प्राप्त होती है जब व्यक्ति अपनी भावनाओं, विचारों और कार्यों के बीच संगति स्थापित कर लेता है।

पारिवारिक समरसता एक और भी गहरा और व्यापक आयाम है जो तब उत्पन्न होती है जब परिवार के सभी सदस्य अपनी-अपनी भूमिका को पूर्ण समझदारी और स्वीकार भाव के साथ निभाते हैं। इस स्थिति में न तो कोई शोषण होता है और न ही किसी की उपेक्षा होती है। बल्कि सभी सदस्यों के बीच प्रेम, सम्मान, समझदारी और पारस्परिक सहयोग का वातावरण होता है। यह पारिवारिक सामंजस्य व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सामूहिक जिम्मेदारी के बीच संतुलन स्थापित करता है।

सामाजिक स्तर पर समरसता का अर्थ विभिन्न परिवारों, समुदायों और सामाजिक समूहों के बीच सहयोग, सामंजस्य और पारस्परिक सम्मान से है। यह समरसता जाति, धर्म, भाषा या आर्थिक स्थिति के आधार पर भेदभाव को समाप्त करती है और सभी के लिए न्याय, समानता और अवसरों की उपलब्धता सुनिश्चित करती है। इसमें शिक्षा, स्वास्थ्य और आर्थिक अवसरों तक सभी की समान पहुंच होती है और महिलाओं का सम्मान और सशक्तिकरण भी सम्मिलित होता है।

प्राकृतिक स्तर पर समरसता मानव और प्रकृति के बीच एक संतुलित, सम्मानजनक और पारस्परिक रूप से लाभकारी संबंध स्थापित करने से संबंधित है। यह समरसता तब संभव होती है जब मानव प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग संयम और विवेक के साथ करता है, पर्यावरण संरक्षण को सर्वोच्च प्राथमिकता देता है, कृषि और औद्योगिक गतिविधियों में रासायनिक पदार्थों का न्यूनतम उपयोग करता है, और जल, वायु तथा मिट्टी की गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए निरंतर प्रयास करता है। यह प्राकृतिक समरसता न केवल वर्तमान पीढ़ी के कल्याण के लिए आवश्यक है, बल्कि भावी पीढ़ियों के लिए एक स्वस्थ और जीवंत पृथ्वी सुनिश्चित करने के लिए भी अनिवार्य है।

8. आधुनिक चुनौतियां और मध्यस्थ दर्शन के समाधान

भौतिकवाद और उपभोक्तावाद: बीसवीं शताब्दी के अंत तक इस धरती पर पाए जाने वाला मानव विभिन्न संप्रदाय और समुदाय में बंटा हुआ, शोषण संघर्ष पूर्वक जी रहा है। मध्यस्थ दर्शन का समाधान भौतिक सुविधाओं को साधन मानना है, साध्य नहीं। यह दर्शन आवश्यकता और लालच के बीच अंतर समझने और उत्पादन में मानवीयता के समावेश पर बल देता है।

पारिवारिक विघटन: आधुनिक जीवनशैली के कारण परिवारों में विघटन हो रहा है। मध्यस्थ दर्शन इसका समाधान परिवार के महत्व की समझ विकसित करने, पीढ़ियों के बीच संवाद स्थापित करने और व्यक्तिगत स्वतंत्रता तथा पारिवारिक जिम्मेदारी में संतुलन स्थापित करने में प्रस्तुत करता है।

शिक्षा व्यवस्था की समस्याएं: वर्तमान शिक्षा व्यवस्था केवल सूचना देती है, समझ नहीं। मध्यस्थ दर्शन के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य चेतना विकास होना चाहिए। यह मूल्य आधारित शिक्षा, व्यावहारिक और सैद्धांतिक ज्ञान के संयोजन तथा स्थानीय संस्कृति और वैश्विक दृष्टिकोण के संतुलन पर बल देता है।

9. व्यावहारिक अनुप्रयोग: केस स्टडी

आनंद पैटर्न: सहकारिता का उदाहरण- गुजरात के आनंद जिले में दूध उत्पादक सहकारी संस्थाओं का विकास मध्यस्थ दर्शन के सिद्धांतों के अनुकूल है। इस मॉडल में किसानों का सामूहिक हित संरक्षित है, उत्पादन से लेकर विपणन तक की व्यवस्था स्थानीय नियंत्रण में है, लाभ का न्यायसंगत वितरण होता है और महिलाओं की सक्रिय भागीदारी है (Kurien, 2005)।

केरल का कुदुम्बश्री मॉडल- केरल की कुदुम्बश्री योजना में महिला स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से परिवार से समुदाय तक का विकास, आर्थिक सशक्तिकरण के साथ सामाजिक जागरूकता, स्थानीय संसाधनों का बेहतर उपयोग और पारिवारिक एकता में वृद्धि देखी गई है (Devika & Thampi, 2007)।

हिवरे बाजार: संपूर्ण ग्राम विकास- महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले के हिवरे बाजार गांव में जल संरक्षण के माध्यम से कृषि विकास, सामुदायिक सहयोग से पर्यावरण सुधार, शिक्षा और स्वास्थ्य में सुधार तथा सामाजिक समरसता में वृद्धि देखी गई है (Pawar, 2009)।

10. नीतिगत सुझाव

मध्यस्थ दर्शन के व्यावहारिक अनुप्रयोग के लिए समकालीन नीतिगत ढांचे में व्यापक सुधार की आवश्यकता है। शिक्षा नीति के संदर्भ में, मध्यस्थ दर्शन एक मौलिक परिवर्तन की मांग करता है जो वर्तमान सूचना-केंद्रित शिक्षा प्रणाली से हटकर चेतना विकास मूलक शिक्षा की ओर बढ़े। इस नवीन शैक्षणिक दृष्टिकोण में केवल तथ्यों और आंकड़ों का संग्रह नहीं, बल्कि गहरी समझ का विकास होना चाहिए जो व्यक्ति को जीवन की वास्तविकताओं को समझने और उनके साथ सामंजस्य स्थापित करने में सक्षम बनाए। इसके साथ ही मूल्य आधारित पाठ्यक्रम का विकास आवश्यक है जो न्याय, धर्म, सत्य और प्रेम जैसे शाश्वत मानवीय मूल्यों को न केवल सिखाए बल्कि व्यावहारिक जीवन में उनके अनुप्रयोग की क्षमता भी विकसित करे। साथ ही, शिक्षा में व्यावहारिक कुशलता का समावेश होना चाहिए जो विद्यार्थियों को जीवन में वास्तव में उपयोगी कौशल प्रदान करे, न कि केवल परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए रटकर याद रखने वाली जानकारी। इसके अतिरिक्त, स्थानीयकरण की प्रक्रिया में स्थानीय भाषा, संस्कृति और विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुकूल शिक्षा का विकास होना चाहिए जो वैश्विक दृष्टिकोण के साथ स्थानीय जड़ों को भी मजबूत बनाए।

स्वास्थ्य नीति के क्षेत्र में भी मध्यस्थ दर्शन एक समग्र और बहुआयामी दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। समग्र स्वास्थ्य की अवधारणा में केवल शारीरिक स्वास्थ्य पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक और

आध्यात्मिक स्वास्थ्य के सभी पहलुओं को समान महत्व देना आवश्यक है। निवारक चिकित्सा के सिद्धांत को अपनाते हुए, बीमारी हो जाने के बाद इलाज करने के बजाय रोगों की रोकथाम और स्वास्थ्य संवर्धन पर अधिक जोर देना चाहिए। इसके साथ ही पारंपरिक चिकित्सा प्रणालियों जैसे आयुर्वेद, योग, प्राकृतिक चिकित्सा और अन्य स्वदेशी उपचार पद्धतियों को केवल वैकल्पिक चिकित्सा के रूप में न देखकर मुख्यधारा की स्वास्थ्य सेवाओं में एकीकृत करना आवश्यक है। सामुदायिक स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से व्यक्तिगत स्वास्थ्य के साथ-साथ सामूहिक और पर्यावरणीय स्वास्थ्य पर भी समान ध्यान देना होगा, क्योंकि व्यक्तिगत कल्याण सामुदायिक कल्याण से अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है।

आर्थिक नीति के संदर्भ में मध्यस्थ दर्शन वर्तमान बाजार-केंद्रित और वैश्वीकरण-उन्मुख आर्थिक मॉडल के विकल्प के रूप में स्थानीय अर्थव्यवस्था के सुदृढ़ीकरण पर बल देता है। इसका उद्देश्य बाहरी निर्भरता को कम करना और स्थानीय उत्पादन, उपभोग तथा वितरण प्रणालियों को बढ़ावा देना है जो न केवल आर्थिक स्वावलंबन सुनिश्चित करे बल्कि पर्यावरणीय स्थिरता भी बनाए रखे। सहकारिता की भावना को प्रोत्साहित करना इस दर्शन का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू है, जहां व्यक्तिगत लाभ की खोज के साथ-साथ सामूहिक हित और सामाजिक कल्याण का भी पूरा ध्यान रखा जाता है। पर्यावरण अनुकूल विकास की रणनीति में प्रकृति के साथ सामंजस्य बिठाकर आर्थिक विकास को आगे बढ़ाना है, न कि प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन करके अस्थायी समृद्धि हासिल करना। अंततः, न्यायसंगत वितरण की व्यवस्था के माध्यम से संपत्ति और आय की असमानता को कम करना और एक ऐसी आर्थिक संरचना का निर्माण करना है जो सभी व्यक्तियों और समुदायों के लिए गरिमापूर्ण जीवन जीने के अवसर प्रदान करे।

11. भविष्य की संभावनाएं

वैश्विक स्तर पर मध्यस्थ दर्शन: "मानव धर्म एक है, मानव जाति एक है" के सिद्धांत के आधार पर मध्यस्थ दर्शन वैश्विक स्तर पर मानवता के कल्याण में योगदान दे सकता है। यह दर्शन राष्ट्रीय, धार्मिक और जातीय सीमाओं से ऊपर उठकर मानव एकता का संदेश देता है।

अखंड मानव समाज की संभावना: मध्यस्थ दर्शन अखंड मानव समाज के निर्माण की संभावना प्रस्तुत करता है। यह समाज विभाजन और संघर्ष से मुक्त होगा, सभी मानवों के लिए न्याय और समानता होगी, प्रकृति के साथ संतुलित संबंध होंगे और शांति तथा सामंजस्य का वातावरण होगा।

सतत विकास के लिए मॉडल: मध्यस्थ दर्शन आधारित ग्राम व्यवस्था सतत विकास (Sustainable Development) का एक आदर्श मॉडल हो सकती है जो पर्यावरणीय संरक्षण सुनिश्चित करे, सामाजिक न्याय को बढ़ावा दे, आर्थिक समृद्धि में योगदान दे और सांस्कृतिक विविधता का सम्मान करे।

12. चुनौतियां और सीमाएं

मध्यस्थ दर्शन की सबसे बड़ी चुनौती यह है कि यह समझदारी की मांग करता है। लोगों में इस समझ का विकास करना एक धीमी और निरंतर प्रक्रिया है। पारंपरिक मानसिकता का बदलाव, सदियों से चली आ रही सोच और व्यवहार के पैटर्न को बदलना आसान नहीं है। मध्यस्थ दर्शन के सिद्धांतों को व्यावहारिक जीवन में उतारने के लिए मानसिकता में मौलिक परिवर्तन आवश्यक है। वर्तमान शिक्षा, राजनीतिक और आर्थिक संस्थाएं इस नए दर्शन के लिए तैयार नहीं हैं। इन संस्थाओं में आवश्यक परिवर्तन लाना एक बड़ी चुनौती है।

मध्यस्थ दर्शन के सिद्धांतों को विभिन्न भौगोलिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों में परखने की आवश्यकता है। इसके लिए व्यापक क्षेत्रीय अध्ययन आवश्यक हैं। मध्यस्थ दर्शन आधारित कार्यक्रमों के दीर्घकालिक प्रभावों का अध्ययन करना आवश्यक है। यह जानना जरूरी है कि ये सिद्धांत समय के साथ कितने प्रभावी रहते हैं। मध्यस्थ दर्शन और अन्य दर्शनों या विकास मॉडलों के बीच तुलनात्मक अध्ययन से इसकी विशिष्टता और प्रभावशीलता को बेहतर समझा जा सकता है।

13. निष्कर्ष

मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद, आचार्य ए. नागराज की एक अभूतपूर्व और मौलिक खोज है, जो मानवता के समक्ष जीवन, समाज और अस्तित्व को समझने एवं जीने का एक समग्र विकल्प प्रस्तुत करती है। इस दर्शन की मूल स्थापना-**"अस्तित्व, सहअस्तित्व है"**-एक ऐसी सार्वभौमिक सच्चाई की ओर इंगित करती है जो व्यक्ति, परिवार, समाज और प्रकृति के बीच स्थायी सामंजस्य स्थापित करने की दिशा दिखाती है। यह न तो पारंपरिक आध्यात्मिक धारणाओं में सीमित है और न ही भौतिकवादी दृष्टिकोण तक, बल्कि एक **अस्तित्वपरक समझ** प्रदान करता है जो वैज्ञानिक, सुसंगत और प्रत्यक्ष अनुभव पर आधारित है।

इस दर्शन में **चेतना के विकास** को मानव समस्याओं के समाधान की कुंजी माना गया है। पशु चेतना से मानव चेतना की ओर रूपांतरण को ही वास्तविक शिक्षा की संज्ञा दी गई है। इससे व्यक्ति का आत्मविश्वास, विवेक और नैतिकता विकसित होती है, जो जीवन की सभी दिशाओं में संतुलन लाने में सक्षम बनाती है। **परिवार**, जो समाज की सबसे बुनियादी इकाई है, केवल एक सामाजिक ढांचा नहीं बल्कि चेतना-विकास और सामाजिक परिवर्तन का मुख्य आधार है।

ग्रामीण जीवन को भी इस दर्शन में विशेष महत्व दिया गया है। यह केवल कृषि-आधारित जीवन नहीं बल्कि सहअस्तित्व की भावना को विकसित करने का सबसे उपयुक्त परिवेश है, जहाँ उत्पादन, कार्य और उपभोग में संतुलन होता है, और सामूहिकता का भाव स्वाभाविक रूप से विकसित होता है। इसलिए **समग्र विकास** का अर्थ भी केवल आर्थिक प्रगति नहीं, बल्कि व्यक्ति, परिवार, समाज और प्रकृति के सभी स्तरों पर संतुलन और समरसता का विकास है।

सुझाव

इस दर्शन को सामाजिक और नीतिगत स्तर पर अपनाने हेतु कुछ व्यावहारिक सुझाव दिए जा सकते हैं:

- **शिक्षा में सुधार:** वर्तमान शिक्षा प्रणाली में मूलभूत परिवर्तन की आवश्यकता है, जिसमें केवल सूचना या कौशल नहीं, बल्कि जीवन के प्रति समझ और चेतना विकास को केंद्र में रखा जाए। शिक्षा को केवल कैरियर आधारित नहीं, बल्कि मूल्य-आधारित बनाना होगा।
- **पंचायती राज का सुदृढ़ीकरण:** लोकतांत्रिक स्थानीय संस्थाओं को केवल प्रशासनिक इकाइयाँ न मानकर, उन्हें सहअस्तित्व के आधार पर निर्णय लेने में सक्षम बनाया जाना चाहिए। इससे नीति निर्माण और संसाधनों का न्यायसंगत वितरण संभव होगा।
- **सहकारी संस्थानों का विकास:** ऐसी आर्थिक व्यवस्थाएं विकसित की जानी चाहिए जो केवल लाभ पर केंद्रित न होकर व्यक्तिगत और सामूहिक हितों के बीच संतुलन बनाए रखें। सहकारी मॉडल इसके लिए एक प्रभावी आधार हो सकता है।
- **पर्यावरण संरक्षण:** मध्यस्थ दर्शन प्रकृति के साथ संतुलित संबंध को जीवन का आधार मानता है। अतः विकास के ऐसे मॉडल अपनाए जाने चाहिए जो प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और पुनरुत्पादन को प्राथमिकता दें, न कि केवल दोहन को।

इस प्रकार, मध्यस्थ दर्शन एक वैकल्पिक और व्यावहारिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, जो आज के संकटग्रस्त समय में मानवता को चेतना, समझ और सामंजस्य की ओर उन्मुख करने का मार्ग प्रशस्त करता है।

भविष्य की दिशा

मध्यस्थ दर्शन सह अस्तित्ववाद केवल एक दार्शनिक सिद्धांत नहीं है, बल्कि मानवता के भविष्य के लिए एक व्यावहारिक मार्गदर्शन है। इसकी सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि हम इसे कितनी गंभीरता से लेते हैं और इसे अपने जीवन में कितना उतारते हैं।

यदि मानव को इस धरती पर रहना है, तो वर्तमान की जीवन शैली पर पुनर्विचार करना ही होगा। मानव चेतना-जागृति के प्रमाण को प्रमाणित करने लिए अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिंतन को अपनाना ही होगा, जिसका प्रयोजन सहअस्तित्व में जीना है। सहअस्तित्व नित्य वर्तमान और प्रभावी है। मानव, मानवत्व से संपन्न होने की संभावना मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद के रूप में समझदारी को विकसित करके जागृत होने की संभावना समीचीन है। यह 'अखंड मानव समाज' एवं प्रकृति में संतुलन के लिए प्रस्ताव है।

संदर्भ एवं स्रोत-

मूल ग्रंथ (Primary Sources)

1. नागराज, ए. (2003). *मानव व्यवहार दर्शन*. अमरकंटक: जीवन विद्या प्रकाशन.

2. नागराज, ए. (2005). *समाधानात्मक भौतिकवाद*. अमरकंटक: जीवन विद्या प्रकाशन।
3. नागराज, ए. (2007). *आशावाद दर्शन*. अमरकंटक: जीवन विद्या प्रकाशन।
4. नागराज, ए. (2009). *सह अस्तित्व दर्शन*. अमरकंटक: जीवन विद्या प्रकाशन।
5. नागराज, ए. (2010). *नैतिक मानवीयता*. अमरकंटक: जीवन विद्या प्रकाशन।

द्वितीयक स्रोत (Secondary Sources)

6. Devika, J., & Thampi, B. V. (2007). Between 'Empowerment' and 'Liberation': The Kudumbashree Initiative in Kerala. *Indian Journal of Gender Studies*, 14(1), 33-60.
7. Kurien, V. (2005). *I Too Had a Dream*. New Delhi: Roli Books.
8. Pawar, P. S. (2009). Watershed Development and Livelihood Security: Experiences from Hivre Bazar. *Economic and Political Weekly*, 44(52), 89-91.

वेब स्रोत (Web Sources)

19. Madhyasth Darshan Info. (2024). "What is Madhyasth Darshan?" Retrieved from <https://madhyasth-darshan.info/about/what-is-madhyasth-darshan/>
20. Jeevan Vidya Research Foundation. (2023). "Coexistential Philosophy: A New Discovery." Retrieved from madhyasth-darshan.blogspot.com
21. Archive.org. (2012). "Manav Vyavhar Darshan - Hindi English 2012." Retrieved from <https://archive.org/details/ZzManavVayavardarshanHindiEnglish2012>

अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ (International References)

22. Capra, F. (1996). *The Web of Life: A New Scientific Understanding of Living Systems*. New York: Anchor Books.
23. Laszlo, E. (2004). *Science and the Akashic Field: An Integral Theory of Everything*. Rochester: Inner Traditions.
24. Wilber, K. (2000). *A Theory of Everything: An Integral Vision for Business, Politics, Science and Spirituality*. Boston: Shambhala Publications.

परिशिष्ट (Appendices)

परिशिष्ट A: मध्यस्थ दर्शन की मूल शब्दावली

- **अस्तित्व:** वह जो है, जो था और जो रहेगा - यह नित्य, अमर और अविनाशी है
- **सहअस्तित्व:** दो या अधिक इकाइयों का एक साथ होना, परस्पर पूरकता में रहना
- **जीवन:** चेतन इकाई जो देख, सुन, जान सकती है
- **चेतना:** जीवन की क्रियाशीलता, जागरूकता की अवस्था

- **समझ:** वास्तविकता की स्पष्ट पहचान, भ्रम रहित स्थिति
- **मानवत्व:** मानव का स्वभाव, न्याय-धर्म-सत्य में जीना
- **संस्कार:** पूर्व अनुभवों से निर्मित मानसिक पैटर्न
- **समाधान:** संतुष्टि की स्थिति, समस्या रहित अवस्था

परिशिष्ट B: चेतना की चार अवस्थाओं का विस्तृत विवरण

1. **भ्रम अवस्था:**
 - लक्षण: भौतिक संसार को ही सब कुछ मानना
 - प्रभाव: अंधी दौड़, असंतुष्टि, तनाव
 - उदाहरण: केवल धनसंपत्ति को खुशी का साधन मानना
2. **मोह अवस्था:**
 - लक्षण: रिश्तों में अत्यधिक आसक्ति
 - प्रभाव: ईर्ष्या, स्वामित्व की भावना, द्वंद
 - उदाहरण: परिवार के नाम पर गलत काम करना
3. **प्रमाद अवस्था:**
 - लक्षण: गफलत, लापरवाही, अज्ञानता
 - प्रभाव: गलत निर्णय, हानिकारक क्रियाएं
 - उदाहरण: पर्यावरण की अनदेखी करना
4. **जागृति अवस्था:**
 - लक्षण: समझदारी, विवेक, न्यायधर्मसत्य में जीना
 - प्रभाव: शांति, संतुष्टि, सामंजस्य
 - उदाहरण: सबके साथ न्यायपूर्ण व्यवहार करना